ISSN No-2231-5063 Vol.1,Issue.VI/Dec 2011pp.1-4

Research Paper

मध्ययुगीन संत संतसेना का साहित्य और तत्कालीन समाज

प्रा. सिंधू खिलारे
हिंदी विभाग,उमा महाविद्यालय, पंढरपुर, जिला : सोलापुर.

प्रस्तावना :-

14 वीं शताब्दी में भारत राजनीतिक, सामाजिक, धार्मिक, आर्थिक दृष्टि से अत्यंत विषण्णावस्था में था। विशेषकर समाज का साधारण और निम्न स्तर का वर्ग अंधश्रध्दा, जातियता, कर्मकांड आदि की जंजीरों में जकड़ा हुआ था। निम्न वर्ग के लिए भक्ति का मार्ग सुलभ करनेवाले संतों में संत सेना एक प्रमुख संत थे।

संत सेना का जन्म वि. सं. 1357 (1300 ई.) में बाँधवगड़ में हुआ। बाँधवगढ़ मध्य प्रदेश में है और आज भग्नावस्था में है। महान संत, विचारक, विद्रोही, समाज सुधारक, श्री. विठ्ठल के अनन्य भक्त और वारकरी के रूप में सेना का व्यक्तित्व आकर्षक है।

मध्ययुगीन संत संतसेना का साहित्य और तत्कालीन समाज:

संतकाव्य का प्रधान उद्देश्य जनसाधारण को सुखी बनाना था। अत: उन्होंने सुधारवादी स्वर अपनाकर कर्मकांड, रूढ़िवाद, मूर्तिपूजा, जाति-पाँति एवं ऊँच-नीच आदि की कटु आलोचना की । संत सेना ने मानवतावाद का संदेश दिया।

सेना नाई का काम करते थे। एक तरह से शारीरिक स्वच्छता ही उनका कार्य था। बाल काटना, दाढ़ी बनाना अथवा नाखून काटना, मूँछे काटना या उन्हें अच्छा आकार देना उनका काम था। लेकिन उसी के रूपक द्वारा सदाचरण, मन:शुध्दी का उपदेश दिया है। मन का अंधकार दूर करना, दुविधा का नाश करना, संशय को मेटना, सच्चे ज्ञान को आत्मसात करना, मन की अशुध्दियों को दूर करना चित्तशुध्दी का उपाय है –

"सेन एकसी खिजमत कीजे, जिद म्हारो राम पतीजे।
ऐसी राचेडी करणी री, केंची समझ-समझ खडीजे॥
सीली सूरत शब्दी चमोटा, विरतीने निरमज कीजे।
निरण नेरणी निज कर झेलो, करमा नख लारीजे॥"

संत सेना रहनी को ही सर्वोपरी मानते थे। अत: स्पष्ट है कि संतों ने सदाचरण पर बड़ा बल दिया है, उसे ही अपनी उन्नति, सबसे बड़ा सोपान माना है । संत सेना ने भक्ति में सदाचरण को एक अंग के रूप में स्वीकार किया है । सदाचरण तभी संभव है जब कि आचरण सभी सांसारिक विकारों से रहित है । सांसारिक विकारों में काम, क्रोध, मद, लोभ, मत्सर आदि का समावेश होता है । उनमें कनक-कामिनी का प्रमुख एवं महत्त्वपूर्ण स्थान है। सेना ने अपनी कविता में इनसे बचने की चेनावती दी है और गुरूकृपा तथा सत्संग के उपाय से अपने उध्दार की प्रार्थना की है।

संत कवियों में आत्मनिवेदन, आत्मसमर्पण तथा शरणागति की भावना बड़ी तीव्र होती है। ईश्वर की

 Vol.1,Issue.VI/Dec 2011pp.1-4

शरणागत वत्सलता के प्रति इनमें अगाध श्रध्दा होती है और अपने अवगुणों के साथ वे ईश्वर की शरण में जाते हैं, क्योकिं उन्हे विश्वास है कि भक्तों की अवगुणों के प्रति ध्यान नहीं देते। संत सेना कहते हैं -

"प्रभु मोरे अवगुण चित न धरौ।
पतित पावन नाम तिहारो, अपने पन ही करो।"
"अलख पुरूष धर विरत तहमारी, हरदम फेरी दीजे।
गुरू प्रताप सेनाजी गावे, पल-पल चरण में लीजे।"

निष्कर्ष :-

संत सेना ने भक्तिभावना के माध्यम से अपने कर्म के माध्यम से मानवतावाद का संदेश दिया है। उन्होंने आत्मसुधार पर बल दिया है। इसी के फलस्वरूप हमारा मन शुध्द हो सकता है, हम मानवता के योग्य बन जाते हैं, हमारा उध्दार हो जाता है। संत सेना का यही संदेश था।

संदर्भ :-

1) राजनाथ शर्मा - हिंदी कवि - लेखक
2) डॉ. अशोक तिवारी - हिंदी साहित्य का इतिहास
3) डॉ. दीपा तिवारी - संत कवियों का उपदेश